MY BOOK GURU

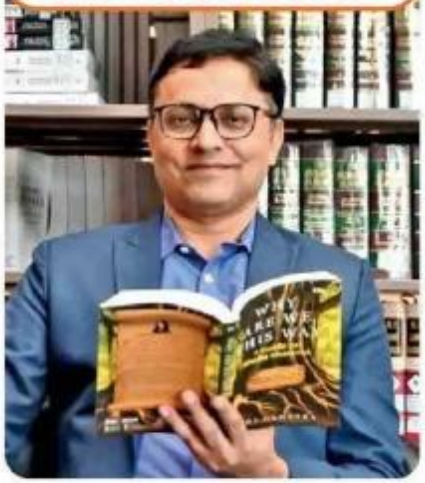

डॉ. अंशुमान जैसवाल, NMIMS इंदौर के डायरेक्टर

बदलाव को अपनाकर भी अपनी जड़ों से जुड़े रहने की सीख देती है यह किताब

डॉ. अंशुमान जैसवाल एनएमआईएम डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी के निदेशक हैं। उन्हें शिक्षा, रिसर्च और कॉर्पोरेट कंसल्टिंग का लंबा अनुभव है। इससे पहले वे यूपीईएस, इंडियन स्कूल ऑफ हॉस्पिटैलिटी और बेनेट यूनिवर्सिटी में अहम जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं। आईआईएम अहमदाबाद से पीएचडी कर चुके डॉ. जैसवाल ने अमेरिका की ग्लोबल कंसल्टिंग फर्मों में भी काम किया है।

मैं अमी गनात्रा की किताब 'Why are we this way?' (हम ऐसे क्यों हैं?) पढ़ रहा हूं। अमी आईआईएम अहमदाबाद में मेरी जूनियर रही हैं। मैनेजमेंट प्रोफेशनल के तौर पर करियर शुरू करने के बाद उन्होंने लेखक और हिंदू संस्कृति व पौराणिक कथाओं की एक्सपर्ट बनने का रास्ता चुना। वे धार्मिक और दार्शनिक, दोनों तरह के मुश्किल कॉन्सेप्ट और विचारों को इतनी आसानी से समझाती हैं कि किताब को नीचे रखने का मन ही नहीं करता। हजारों सालों में हिंदू धर्म के विकास और भारतीय दर्शन के अलग-अलग स्कूलों जैसे न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, चार्वाक पर उनकी चर्चा बहुत कुछ सिखाती है।

यह बात दिलचस्प बात है कि ऋग्वेद के समय में भगवान इंद्र पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था, लेकिन समय के साथ भगवान विष्णु का महत्व बढ़ने लगा। इसी तरह, रुद्र ज्यादा महत्वपूर्ण थे, जिनकी जगह बाद में भगवान शिव ने ले ली। आज जिस तरह हम गणेश जी की पूजा करते हैं तब लोग अच्छी किस्मत और शुभ शुरुआत के लिए बृहस्पति की पूजा करते थे। ऐसे बदलाव होने पर भी हिंदू धर्म अतीत से पूरी तरह अलग नहीं होता, बल्कि वह बदलता है, विकसित होता है और खुद को ढालता है, जिससे निरंतरता बनी रहती है। यह हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो हमें इसे सनातन धर्म कहने की अनुमति देता है। अमी की किताब हमें हिंदू धर्म और दर्शन के खजाने को समझने का एक व्यवस्थित तरीका देती है, जिससे हममें से हर कोई अपनी समझ और नजरिया बना सकता है।

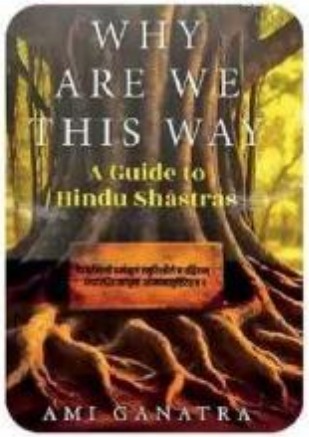

Publication: Dainik Bhaskar (City Bhaskar)

Edition: Indore